उच्च शिक्षा विभाग

उत्तर प्रदेश शासन के पाठ्यक्रम निर्माण के दिशा निर्देशों के अनुरूप

त्रिवर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम (सी0बी0सी0एस0)

विषय—पालि

संस्कृत एवं प्राकृतभाषा विभाग,

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय,

गोरखपुर

2021

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

उत्तर प्रदेश के समस्त विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों के लिए न्यूनतम एकीकृत पाठ्यक्रम

विषय—पालि (स्नातक स्तर—ooooo पाठ्यक्रम)

बी॰ ए॰ प्रथम वर्ष

प्रथम अधिसत्र—	**6 क्रेडिट**	
पालि तिपिटक का सामान्य परिचय, सुत्त पिटक	कोड—A420101T	
द्वितीय अधिसत्र—	**6 क्रेडिट**	
पालि व्याकरण	कोड— A420201T	

बी॰ ए॰ द्वितीय वर्ष

तृतीय अधिसत्र—	**6 क्रेडिट**	
पालि साहित्य का इतिहास, थेरवाद बौद्ध दर्शन	कोड—A420301T	
चतुर्थ अधिसत्र—	**6 क्रेडिट**	
पालि व्याकरण, अनुवाद, और लेखन	कोड—A420401T	

बी॰ ए॰ तृतीय वर्ष

पंचम अधिसत्र—	**05+05=10 क्रेडिट**	
प्रथम प्रश्नपत्र: *थेरवाद बौद्ध धर्म का प्रचार एवं प्रसार*	कोड—A420501T	05 **क्रेडिट**
द्वितीय प्रश्नपत्र: *मिलिन्दपञ्हो*	कोड— A420502T	05 **क्रेडिट**
षष्ठ अधिसत्र—	**05+05=10 क्रेडिट**	
प्रथम प्रश्नपत्र: *अभिधम्मत्थसङ्गहो*	कोड—A420601T	05 **क्रेडिट**

वैकल्पिक प्रश्न पत्र

द्वितीय प्रश्नपत्र: *विसुद्धिमग्ग*	कोड— A420602T	05 **क्रेडिट**
अथवा		
तृतीय प्रश्नपत्र: *बौद्ध दर्शन I*	कोड—A420603T	05 **क्रेडिट**
अथवा		
चतुर्थ प्रश्नपत्र: *बौद्ध दर्शन II*	कोड—A420604T	05 **क्रेडिट**

स्नातकस्तरीय सी0बी0सी0एस0 पाठ्यक्रम का प्रारूप
पालि

सेमेस्टर के अनुसार सभी कोर्स के शीर्षक तथा निर्धारित क्रेडिट			
वर्ष	कोर्स कोड	कोर्स का शीर्षक	क्रेडिट
प्रथम वर्ष		**सेमेस्टर–I**	
	PALI 101	पालि भाषा एवं साहित्य का परिचय	02
	PALI 102 (A 420101T)	पालि तिपिटक का सामान्य परिचय, सुत्त पिटक I	03
	PALI 103 (A 420101T)	पालि तिपिटक का सामान्य परिचय, सुत्त पिटक II	03
		सेमेस्टर– II	
	PALI 104 (A 420201T)	पालि व्याकरण–I	03
	PALI 105 (A 420201T)	पालि व्याकरण–II	03
द्वितीय वर्ष		**सेमेस्टर– III**	
	PALI 201 (A 420301T)	पालि साहित्य का इतिहास, थेरवाद एवं बौद्ध दर्शन– I	03
	PALI 202 (A 420301T)	पालि साहित्य का इतिहास, थेरवाद एवं बौद्ध दर्शन– II	03
		सेमेस्टर– IV	
	PALI 203 (A 420401T)	पालि व्याकरण (बालावतार)	03
	PALI 204 (A 420401T)	पालि व्याकरण, अनुवाद और लेखन	03
तृतीय वर्ष		**सेमेस्टर–V**	
	PALI 301 (A 420501T)	थेरवाद एवं बौद्ध धर्म का प्रचार एवं प्रसार– I	03
	PALI 302 (A 420501T)	थेरवाद एवं बौद्ध धर्म का प्रचार एवं प्रसार– II	02
	PALI 303 (A 420502T)	*मिलिन्दपञ्हो* – I	03
	PALI 304 (A 420502T)	*मिलिन्दपञ्हो* – II	02
		सेमेस्टर–VI	
	PALI 305(A 420601T)	अभिधम्मत्थसंगहो– I	03
	PALI 306(A 420601T)	अभिधम्मत्थसंगहो– II	02
		ओपेन इलेक्टिव कोर्स	
	PALI 307(A 420602T)	विसुद्धिमग्गो– I	03
	PALI 308(A 420602T)	विसुद्धिमग्गो– II	02
		अथवा	
	PALI 309(A 420603T)	बौद्धदर्शन प्रथम भाग– I	03
	PALI 310(A 420603T)	बौद्धदर्शन प्रथम भाग– II	02
		अथवा	
	PALI 311(A 420604T)	बौद्धदर्शन द्वितीय भाग– I	03
	PALI 312(A 420604T)	बौद्धदर्शन द्वितीय भाग– II	02

माइनर (a) इलेक्टिव कोर्स
पालि भाषा एवं साहित्य का परिचयात्मक पाठ्यक्रम

1. **पाठ्यक्रम का नाम** — पालि भाषा एवं साहित्य का परिचय

2. **पाठ्यक्रम के लाभार्थी** — यह पाठ्यक्रम बी0ए0 प्रथम वर्ष में पालि को मुख्य

   विषय के रूप में चयन करने वाले सभी छात्रों के लिए प्रथम सेमेस्टर में अनिवार्य होगा। अन्य विषयों के विद्यार्थी इसे माइनर (a) इलेक्टिव कोर्स के रूप सम सेमेस्टर में पढ़ सकेंगे।

3. **पाठ्यक्रम का अधिगम प्रतिफल—**

   (I). छात्र पालि भाषा और साहित्य को समझने में समर्थ हो सकेंगे।
   (II). छात्र इस पाठ्यक्रम का अध्ययन कर उत्कृष्ट पालिग्रन्थों तथा साहित्य का अध्ययन करने में समर्थ हो सकेंगे।
   (III). छात्र पालिकालीन संस्कृति का अध्ययन करने में भी समर्थ हो सकेंगे।

4. **पाठ्यक्रम की अवधि** – पाठ्यक्रम की अधिकतम अवधि एक सेमेस्टर (छह माह) की होगी।

5. **क्रेडिट** – पाठ्यक्रम दो क्रेडिट का होगा।

6. **पाठ्यक्रम की पूर्णता पर विश्वविद्यालय के नियमों के अनुसार परीक्षा ली जाएगी।**

पाठ्यक्रम विवरण

Year: First वर्ष- प्रथम		Semester: I सेमेस्टर– प्रथम के साथ
कोर्स **PALI 101**	***कोर्स* शीर्षक- पालि भाषा एवं साहित्य का परिचय**	***क्रेडिट 02***

Course outcomes: **अधिगम उपलब्धि-**

CO-1 छात्रों को पालि भाषा एव साहित्य का प्रारम्भिक ज्ञान हो सकेगा।
CO-2 इस पाठ्यक्रम से छात्रों में उच्चस्तरीय संस्कृत साहित्य पढ़ने के प्रति रूचि उत्पन्न होगी।
CO-3 छात्र अपने दैनिक जीवन में पालि का प्रयोग कर सकेंगे।
CO-4 छात्र अपने व्यक्तित्व का विकास करने में समर्थ होंगे।

Unit/इकाई	**Topics /पाठ्य विषय**
I	पालि भाषा का उद्भव एवं विकास
II	शब्दरूप एवं धातुरूप–परिचय
III	सन्धि–परिचय
IV	कारक एवं विभक्ति
V	शब्दरूप–बुद्ध, भिक्खु, मुनि, रत्ति, नदी, चित्त
VI	धातुरूप–भू, पठ्, भुज्, कुध्, लिख्
VII	पालिपाठसंगहो से निम्नलिखित पाठ :– (I). सुमेध कथा (II). शश जातक (III). बक जातक (IV). वानरिन्द जातक (V). उपालिदारकवत्थु

सतत मूल्यांकन-

अधिन्यास (असाइनमेंट) एवं मौखिकी परीक्षा

लिखितपरीक्षा (वस्तुनिष्ठ/लघुउत्तरीय)

संस्तुत ग्रंथ/*अनुशंसित* अध्ययन–सामग्री

- बालावतार, सम्पादक स्वामी द्वारिकादास शास्त्री, बुद्ध भारती, वाराणसी, 2007
- पालिव्याकरण–भिक्षु धर्मरक्षित, ज्ञानमण्डल प्राइवेट लिमिटेड, वाराणसी, संवत् 2028

पाठ्यक्रम विवरण

विषय- *पालि* (स्नातक स्तर)

Programme Outcomes (POs)

POs-1 विद्यार्थियों को *पालि भाषा में* लेखन, वाचन एवं अध्ययन की दृष्टि से भाषागत दक्षता प्राप्त होगी।

POs-2 सहज एवं स्वाभाविक रूप से भाषागत *प्रवीणता* प्राप्त कर उनमें प्रभावशाली अभिव्यक्ति की क्षमता उत्पन्न होगी|

POs-3 आत्मविश्वास से युक्त एवं नेतृत्व क्षमता के धारक होंगे|

POs-4 नैतिक एवं चारित्रिक दृष्टि से मूल्यवान व्यक्तित्वधारी होकर भारतीयता के बोध के साथ वैश्विक नागरिक के रूप में भावी चुनौतियों का सामना करने में *समर्थ* होंगे|

Programme Specific Outcomes (PSO)

PSO-1 *लोक भाषा के रूप में छात्र पालि* भाषा के *महत्त्व एवं* उसकी वर्तमान प्रासंगिकता को जानने-समझने योग्य होंगे|

PSO-2 *पालि साहित्य की विभिन्न विधाओं पाठ, गाथा एवं व्याकरण से सुपरिचित हो कर पालि भाषा के विशेषज्ञ बन सकेंगे।* |

PSO-3 *पालि तिपिट्टक, व्याकरण थेरवाद बौद्ध–दर्शन अभिधम्मत्यथसंगहो, विसुद्धिमग्गो इत्यादि के विषय में पूर्ण रूप से जान सकेंगे।*|

PSO-4 *पालि साहित्य में निहित नैतिकता एवं आध्यात्मिकता को अनुभूव कर भारतीय संस्कृति की व्यापकता एवं उदारता को विश्वस्तर पर फैलाने में समर्थ होंगे।*

PSO-5 *संघ आचार व्यवहार, अहिंसा करूणा, त्याग इत्यादि भारतीय संस्कृति के मूल तत्त्वों को ज्ञान कर उत्तम चरित्रवान् मानव एवं कुशल नागरिक बनेंगें।*

PSO-6 समसामयिक समस्याओं के समाधान के रूप में *पालि* साहित्य में निबद्ध सर्वाङ्गीणता के प्रति शोधपरक दृष्टि का विकास होगा|

पाठ्यक्रम विवरण

Year: First वर्ष- प्रथम			Semester: I सेमेस्टर– प्रथम
कोर्स PALI 102 कोड- A420101T	*कोर्स* 1 - पालि तिपिटक का सामान्य परिचय, सुत्त पिटक I		*क्रेडिट 03*

Course outcomes: अधिगम उपलब्धि-

CO-1 विद्यार्थी पालि साहित्य का सामान्य परिचय प्राप्त कर पालि साहित्य के विभिन्न भेदों से परिचित हो सकेंगे |

CO-2 *वे तिपिट्टक के भाषा सौन्दर्य एवं उसमें निहित ज्ञानराशि से परिचित हो सकेंगे।*

CO-3 *मज्झिम निकाय एवं संयुक्त निकाय की विषय वस्तु से परिचित होकर तथागत के धम्मचक्कपवत्तन से प्रेरणा ले सकेंगे।*

CO-4 *वे थेरीगाथा से परिचित हो जाएंगे।*

Unit/इकाई	Topics /पाठ्य विषय
I	पालि त्रिपिटक का परिचय, नवाङ्गसत्थुसासन।
II	अरियपरियेसना सुत्त (मज्झिम निकाय 26)।
III	धम्मचक्कपवत्तन सुत्त (संयुत्त निकाय 56.11)।
IV	थेरीगाथा प्रथम वर्ग।

सतत मूल्यांकन-

1. *कक्षा में प्रस्तुतीकरण*
2. *अधिन्यास (*Assignment*) कार्य*
3. *कक्षा उपस्थिति*

संस्तुत ग्रंथ-

उपाध्याय, भरत सिंह, पालि साहित्य का इतिहास, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, २०००

उपाध्याय, भरत सिंह, थेरीगाथा, गौतम बुक सेंटर, दिल्ली, २०१०

काश्यप, भिक्षु जगदीश, मज्झिम-निकाय, नव नालन्दा महाविहार, नालन्दा, १९५८

धर्मरक्षित, भिक्षु , मज्झिम निकाय, महाबोधिसभा, वाराणसी, १९६४ (द्वितीय संस्करण)

धर्मरक्षित, भिक्षु , सुत्तनिपात, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, २०१४ (पुनर्मुद्रण)

सराओ, के० टी० एस०, धम्मपद: एक व्युत्तिपरक अनुवाद, विद्यानिधि प्रकाशन, दिल्ली, २०१५

सांकृत्यायन, राहुल, पालि साहित्य का इतिहास, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, २०११, (चतुर्थ संस्करण)

शास्त्री, द्वारिकादास, दीघ निकाय, बौद्ध भारती प्रकाशन, वाराणसी, २००६।

शास्त्री, द्वारिकादास, मज्झिम निकाय, बौद्ध भारती प्रकाशन, वाराणसी, २००६।

शास्त्री, द्वारिकादास, संयुत्त निकाय, बौद्ध भारती प्रकाशन, वाराणसी, २००८।

(1889). *Dīgha-Nikāya*. Vol. I. Carpenter, T.W. and Rhys Davids J.E. (ed.). London: The Pali Text Society.

(1904). *Saṁyutta Nikāya*. Vol.VI. Feer, L. (ed.). London: The Pali Text Society.

Hinuber, O. v. (1996). *A Handbook of Pali Literature*. Berlin: Walter de Gruyter.

Law, B. C. (2000). *A History of Pali Literature*. Varanasi: Indica Books.

Mahendra, Anagārika, (2017).*Therīgathāpāli: A Contemporary Translation*, Dhamma Publishers, MA, USA.

Sarao, K T S, (2009), *Dhammapada: A Translators Guide*: Munshiram Manoharlal Publishers, Delhi.

Smith, Dines Andersen and Helmer.(1913).*Suttanipāta.* London: Pali Text Society.

The Middle Length Discourses of the Buddha: A New Translation of the Majjhima Nikāya. (1995). (B. Bodhi, & Ñ. Thera, Trans.) Boston: Wisdon Publications.

The Connected Discourses of the Buddha. (2020). (B. Bodhi, & Ñ. Thera, Trans.) Boston: Wisdom Publications.

Walshe, M. (1995). *The Long Discourses of the Buddha: A Translation of the Dīgha Nikāya*. Boston: Wisdom Publication.

नोट: पालि मूल तिपिटक (देवनागरी) के लिए नालन्दा संकलन दर्शनीय हैं।

Year: First वर्ष - प्रथम	Semester: I सेमेस्टर– प्रथम

कोर्स PALI 103 कोड- A420102T	कोर्स 2 - पालि तिपिटक का सामान्य परिचय, सुत्त पिटक II	क्रेडिट 03

Course outcomes: अधिगम उपलब्धि-

CO-1 *पालि*– व्याकरण का सामान्य ज्ञान प्राप्त कर उसकी वैज्ञानिकता से सुपरिचित हो सकेंगे |

CO-2 *पालि*– वर्णों के शुद्ध उच्चारण कौशल का विकास होगा |

CO-3 *धम्मपद के यमक, अपमाद और चित्त वग्ग के अध्ययन से चरित्र निर्माण कर सकेंगे।*

CO-4 *सुत्त निपात के कतिपय संवादों तथा प्रमुख श्रावकों के जीवन से सद्वृत्ति की शिक्षा प्राप्त कर सकेंगे।*

CO-5 स्वर एवं व्यंजन के मूल भेद को समझ कर पृथक अर्थावगमन की क्षमता उत्पन्न होगी |

CO-6 स्वर,व्यंजन एवं विसर्ग संधि का विशिष्ट ज्ञान एवं उनके अनुप्रयोग का कौशल विकसित होगा|

Unit / इकाई	Topics / पाठ्य विषय
I	धम्मपद: यमक-वग्ग, अप्पमाद-वग्ग, और चित्त-वग्ग।
II	सुत्तनिपात: उरग-सुत्त, धनिय-सुत्त, और कसिभारद्वाज-सुत्त।
III	महापरिनिब्बान सुत्त (दीघ निकाय 16)।
IV	बुद्ध के प्रमुख श्रावक: सारिपुत्त, मोग्गल्लान, और आनन्द।

सतत मूल्यांकन-

1. कक्षा में प्रस्तुतीकरण
2. अधिन्यास (Assignment) कार्य
3. कक्षा उपस्थिति

संस्तुत ग्रंथ-

उपाध्याय, भरत सिंह, पालि साहित्य का इतिहास, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, २०००

उपाध्याय, भरत सिंह, थेरीगाथा, गौतम बुक सेंटर, दिल्ली, २०१०

काश्यप, भिक्षु जगदीश, मज्झिम-निकाय, नव नालन्दा महाविहार, नालन्दा, १९५८

धर्मरक्षित, भिक्षु , मज्झिम निकाय, महाबोधिसभा, वाराणसी, १९६४ (द्वितीय संस्करण)

धर्मरक्षित, भिक्षु , सुत्तनिपात, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, २०१४ (पुनर्मुद्रण)

सराओ, के० टी० एस०, धम्मपद: एक व्युत्तिपरक अनुवाद, विद्यानिधि प्रकाशन, दिल्ली, २०१५

सांकृत्यायन, राहुल, पालि साहित्य का इतिहास, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, २०११, (चतुर्थ संस्करण)

शास्त्री, द्वारिकादास, दीघ निकाय, बौद्ध भारती प्रकाशन, वाराणसी, २००६।

शास्त्री, द्वारिकादास, मज्झिम निकाय, बौद्ध भारती प्रकाशन, वाराणसी, २००६।

शास्त्री, द्वारिकादास, संयुत्त निकाय, बौद्ध भारती प्रकाशन, वाराणसी, २००८।

(1889). *Dīgha-Nikāya*. Vol. I. Carpenter, T.W. and Rhys Davids J.E. (ed.). London: The Pali Text Society.

(1904). *Saṁyutta Nikāya*. Vol.VI. Feer, L. (ed.). London: The Pali Text Society.

Hinuber, O. v. (1996). *A Handbook of Pali Literature*. Berlin: Walter de Gruyter.

Law, B. C. (2000). *A History of Pali Literature*. Varanasi: Indica Books.

Mahendra, Anagārika, (2017).*TherIgathāpāli: A Contemporary Translation*, Dhamma Publishers, MA, USA.

Sarao, K T S, (2009), *Dhammapada: A Translators Guide*: Munshiram Manoharlal Publishers, Delhi.

Smith, Dines Andersen and Helmer.(1913).*Suttanipāta.* London: Pali Text Society.

The Middle Length Discourses of the Buddha: A New Translation of the Majjhima Nikāya. (1995). (B. Bodhi, & Ñ. Thera, Trans.) Boston: Wisdom Publications.

The Connected Discourses of the Buddha. (2020). (B. Bodhi, & Ñ. Thera, Trans.) Boston: Wisdom Publications.

Walshe, M. (1995). *The Long Discourses of the Buddha: A Translation of the Dīgha Nikāya*. Boston: Wisdom Publication.

नोट: पालि मूल तिपिटक (देवनागरी) के लिए नालन्दा संकलन दर्शनीय हैं।

Year:First वर्ष- प्रथम		Semester: II सेमेस्टर - द्वितीय
कोर्स PALI 104 कोड- A420201T	**कोर्स 1 - पालि व्याकरण–I**	*क्रेडिट 03*

Course outcomes: अधिगम उपलब्धि-

CO-1 *इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्र पालि–व्याकरण से परिचित हो सकेंगे।*

CO-2 *छात्रों को पालि की विभक्तियों, लिङो तथा वचनों सहित शब्दरूपों का ज्ञान हो सकेगा।*

CO-3 *वे क्रियाओं के गण, काल, पुरूष, वचन इत्यादि का ज्ञान प्राप्त कर धातुरूपों को ज्ञान सकेंगे।*

CO-4 *उन्हें पालि–भाषा के उपसर्गों, प्रत्ययों एवं अव्ययों का भी ज्ञान हो सकेगा।*

Unit／इकाई	Topics ／पाठ्य विषय
I	विभत्ति, लिंग, वचन, शब्द रूप, संज्ञा, अकारान्त पुल्लिंग शब्द: धम्म, संघ, चाग, वायाम, यक्ख, ओघ, रूक्ख, गन्धब्ब, आलोक।
II	क्रिया, गण विचार, काल, पुरुष, पच्चुपन्न काल धातु: पच, अस, कन्द, कम्प, जि, दह, दा, पा, कत, गह, छिद, गा, घा, रूच, गिल, तुद, नुद, लू, थु, चि, की, गि, वु, सु, सक, मन, कर, अज्ज, पूज, वन्द, और पाल।
III	शब्द रूप, संज्ञा और विशेषण: फल, पदुम, दुक्ख, रूप, मुनि, इसि, पाणि, दधि, अक्खि, भिक्खु, हेतु, आयु, चक्खु, गाथा, करुणा, पीति, बोधि, इत्थी, नदी, धेनु, यागु, जम्बू, वधू, गो, और चित्तगो, भगवन्तु, चक्खुमन्तु। शब्द रूप, सर्वनाम (तीनो लिंग में): सब्ब, किं, य, और त। शब्द रूप, संख्यावाची: एक, द्वि, ति, चतु, पंच, सत, उभ।
IV	क्रिया (सभी गणों में): अनागत काल, अनुज्ञा (पंचमी), विधिलिंग (सत्तमी), अतीत— परोक्खा, हिय्यत्तनी, अज्जतनी, कालातिपत्ति।
V	उपसग्ग पच्चय एवं *अव्यय*

सतत मूल्यांकन-

1. कक्षा में प्रस्तुतीकरण
2. अधिन्यास (Assignment) कार्य
3. कक्षा उपस्थिति

संस्तुत ग्रंथ-

धर्मरक्षित, भिक्षु, पालि व्याकरण, ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी, २००७ (पुनर्मुद्रण)
लक्ष्मी नारायण तिवारी एवं बीरबल शर्मा, कच्चायनव्याकरण, ताराबुकएजेन्सी, वाराणसी, २०१३
शास्त्री, स्वामी द्वारिका दास, महासामिधम्मकित्तिप्रणीत बालावतार, बौद्ध भारती, वाराणसी, १९९६
Buddhadatta, A. P. (1999). *The New Pali Course* (Vol. I & II). Dehiwala, Sri Lanka: Buddhist Cultural Centre.
Silva, L. D. (2008). *Pali Primer*. Igatpuri, India: Vipassana Research Institute.
Karunatillake, J. W. (2017). *A New Course in Reading Pali* (6th ed.). New Delhi: Motilal Banarsidass.

***

Year:First वर्ष- प्रथम	Semester: II सेमेस्टर - द्वितीय

कोर्स PALI 105 कोड- A420201T	**कोर्स 2 - पालि व्याकरण–II**	*क्रेडिट 03*

Course outcomes: अधिगम उपलब्धि-

CO-1 *इस पाठ्यक्रम के अध्ययन के पश्चात् छात्र पालि–व्याकरण के व्यवहारिक एवं प्रायोगिक पक्षों को ज्ञान सकेंगें।*

CO-2 *भिक्षुधर्मरक्षित विरचित पालि व्याकरण के प्रारम्भिक तीस अध्यायों के विषयों का अभ्यास करके उन्हें प्रावीण्य प्राप्त होगा।*

CO-3 *छात्र पालि साहित्य को भलीभांति समझने से समर्थ होंगे।*

Unit / इकाई	**Topics /पाठ्य विषय**
I	पालि व्याकरण (भिक्षु धर्मरक्षित)—अध्याय 1 से 8
II	पालि व्याकरण (भिक्षु धर्मरक्षित)—अध्याय 9 से 15
III	पालि व्याकरण (भिक्षु धर्मरक्षित)—अध्याय 16 से 23
IV	पालि व्याकरण (भिक्षु धर्मरक्षित)—अध्याय 24 से 30

सतत मूल्यांकन-

1. कक्षा में प्रस्तुतीकरण
2. अधिन्यास (Assignment) कार्य
3. कक्षा उपस्थिति

संस्तुत ग्रंथ-

धर्मरक्षित, भिक्षु, पालि व्याकरण, ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी, २००७ (पुनर्मुद्रण)

लक्ष्मी नारायण तिवारी एवं बीरबल शर्मा, कच्चायनव्याकरण, ताराबुकएजेन्सी, वाराणसी, २०१३

शास्त्री, स्वामी द्वारिका दास, महासामिधम्मकित्तिप्रणीत बालावतार, बौद्ध भारती, वाराणसी, १९९६

Buddhadatta, A. P. (1999). *The New Pali Course* (Vol. I & II). Dehiwala, Sri Lanka:Buddhist Cultural Centre.

Silva, L. D. (2008). *Pali Primer*. Igatpuri, India: Vipassana Research Institute.

Karunatillake, J. W. (2017). *A New Course in Reading Pali* (6th ed.). New Delhi: Motilal Banarsidass.

***

<table>
<tr><td colspan="2">Year: Second
वर्ष- द्वितीय</td><td colspan="2">Semester: III
सेमेस्टर– तृतीय</td></tr>
<tr><td>कोर्स PALI 201
कोड-A420301T</td><td colspan="2">कोर्स 1 - पलि साहित्य का इतिहास, थेरवाद बौद्ध दर्शन– I</td><td>क्रेडिट 03</td></tr>
<tr><td colspan="4">Course outcomes: अधिगम उपलब्धि-
CO-1 इस पाठक्रम के अध्ययन के पाश्चात छात्र पालि साहित्य के इतिहास से परिचित हो सकेंगे।
CO-2 वे पालि अनुपिटक साहित्य, मिलिंदपञ्हो अट्टकथाकारों एवं उनकी से परिचित हो सकेंगे।
CO-3 वे चार आर्यसत्यों तथा बौद्ध दर्शन के प्राथमिक सिद्धान्तों से परिचित भाल्यशैली से हो सकेंगे।</td></tr>
<tr><td>Unit／इकाई</td><td colspan="3">Topics／पाठ्य विषय</td></tr>
<tr><td>I</td><td colspan="3">पालि अनुपिटक साहित्य: मिलिंदपञ्हो, नेत्तिप्पकरण, और पेटकोपदेस का परिचय</td></tr>
<tr><td>II</td><td colspan="3">पालि अट्ठकथाकार: बुद्धघोस, बुद्धदत्त, और धम्मपाल</td></tr>
<tr><td>III</td><td colspan="3">बौद्ध दार्शनिक सिद्धांत: चार आर्य सत्य, प्रतीत्यसमुत्पाद, मध्यम-मार्ग , शील, समाधि, प्रज्ञा, निर्वाण।</td></tr>
<tr><td>IV</td><td colspan="3">राजोवाद जातक, मखादेव जातक, सीलानुसंस जातक</td></tr>
<tr><td colspan="4">सतत मूल्यांकन-
1. कक्षा में प्रस्तुतीकरण
2. अधिन्यास (Assignment) कार्य
3. कक्षा उपस्थिति</td></tr>
<tr><td colspan="4">संस्तुत ग्रंथ-
उपाध्याय, भरत सिंह, पालि साहित्य का इतिहास, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, २०००
धर्मरक्षित, भिक्षु , सुत्तनिपात, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, २०१४ (पुनर्मुद्रण)तिवारी, महेश, पालिपाठसंगहो,
सांकृत्यायन, राहुल, पालि साहित्य का इतिहास, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, २०११, (चतुर्थ संस्करण)
शुक्ला, हरिशंकर, पालि निबंधावलि, तारा बुक एजेंसी, वाराणसी, 1993.
Smith, Dines Andersen and Helmer.(1913). Suttanipāta. London: Pali Text Society.
Analayo, B. (2003). Satipaṭṭhāna: The Direct Path to Realization. Birmingham: Windhorse Publication
Endo, T. (2013). Pali Commenterial Literature. Hong Kong: Centre of Buddhist Studies.
Gethin, R. (1998). The Foundations of Buddhism. Oxford: Oxford University Press.
Hinuber, O. v. (1996). A Handbook of Pali Literature. Berlin: Walter de Gruyter.
Law, B. C. (2000). A History of Pali Literature. Varanasi: Indica Books.
Narada, T. (2006). The Buddha and His Teachings. Mumbai: Jaico Publishing House.
Narada, T. (2017). Buddhism in a Nutshell. USA: BPS Pariyatti Edition
William, Hart. (2009). The Art of Living: Vipassana Meditation: As Taught by S. N. Goenka. HarperOne
Technical References
Digital Pali Reader, Windows and Android Version
Pali Tipitaka, CD-ROM, VRI, Igatpuri, Maharashtra
SuttaCentral:https://suttacentral.net/
Accesstoinsight: https://www.accesstoinsight.org/
https://www.vridhamma.org/ [for reading materials on Vipassana and Vipassana related information]
***</td></tr>
</table>

Year: Second वर्ष- द्वितीय	Semester: III सेमेस्टर– तृतीय

कोर्स PALI 202 कोड-A420301T	**कोर्स 2 - पालि साहित्य का इतिहास, थेरवाद बौद्ध दर्शन– II**	*क्रेडिट 03*

Course outcomes: अधिगम उपलब्धि-

CO-1 *इस पाठ्यक्रम के अध्ययन के पश्चात छात्र पालि सम्बन्धी शोध संसाधनों एवं प्रबन्धन उपकरणों से परिचित हो सकेंगे।*

CO-2 *छात्र विपस्सना योग साधना के अभ्यास से परिचित हो सकेंगे।*

CO-3 *वे विपस्सना के माध्यम से क्रोध नियन्त्रणपूर्वक सन्तुलित जीवनयापन में समर्थ हो सकेंगे।*

Unit /इकाई	Topics / पाठ्य विषय
I	सुत्तनिपात: मंगलसुत्त, वासेट्ठ सुत्त
II	पालि शोध संसाधन की उपयोगिता: संदर्भ प्रबंधन उपकरण (reference management tools), अन्तर्जाल संसाधन (e-resources), डिजिटल पालि रीडर और छट्ठ-संगायन पालि त्रिपिटक के CD-ROM के कम्प्यूटर पर प्रयोग(Uses of Digital Pāli Reader and Pāli Ṭipiṭaka CD-ROM on Computer)।
III	विपस्सना योग साधना का अभ्यास
IV	विपस्सना योग साधना का दैनिक जीवन में प्रभाव: क्रोध नियंत्रण और कुशल क्षेम (Anger management and Well-being)

सतत मूल्यांकन-

1. *कक्षा में प्रस्तुतीकरण*
2- *अधिन्यास (Assignment) कार्य*
3- *कक्षा उपस्थिति*

संस्तुत ग्रंथ-

उपाध्याय, भरत सिंह, पालि साहित्य का इतिहास, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, २०००
धर्मरक्षित, भिक्षु , सुत्तनिपात, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, २०१४ (पुनर्मुद्रण)
तिवारी, महेश, पालिपाठसंगहो,
सांकृत्यायन, राहुल, पालि साहित्य का इतिहास, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, २०११, (चतुर्थ संस्करण)
शुक्ला, हरिशंकर, पालि निबंधावलि, तारा बुक एजेंसी, वाराणसी, 1993.
Smith, Dines Andersen and Helmer.(1913). *Suttanipāta.* London: Pali Text Society.
Analayo, B. (2003). *Satipaṭṭhāna: The Direct Path to Realization*. Birmingham: Windhorse Publication
Endo, T. (2013). *Pali Commenterial Literature*. Hong Kong: Centre of Buddhist Studies.
Gethin, R. (1998). *The Foundations of Buddhism*. Oxford: Oxford University Press.
Hinuber, O. v. (1996). *A Handbook of Pali Literature*. Berlin: Walter de Gruyter.
Law, B. C. (2000). *A History of Pali Literature*. Varanasi: Indica Books.
Narada, T. (2006). *The Buddha and His Teachings*. Mumbai: Jaico Publishing House.
Narada, T. (2017). *Buddhism in a Nutshell*. USA: BPS Pariyatti Edition
William, Hart. (2009). *The Art of Living: Vipassana Meditation: As Taught by S. N. Goenka*. HarperOne

Technical References

Digital Pali Reader, Windows and Android Version
Pali Tipitaka, CD-ROM, VRI, Igatpuri, Maharashtra
SuttaCentral:https://suttacentral.net/
Accesstoinsight: https://www.accesstoinsight.org/
https://www.vridhamma.org/ [for reading materials on Vipassana and Vipassana related information]

***

Year: Second वर्ष - द्वितीय		Semester: IV सेमेस्टर - चतुर्थ
कोर्स PALI 203 कोड-A420401T	*कोर्स 1 - पालि व्याकरण (बालावतार)*	*क्रेडिट 03*

Course outcomes: अधिगम उपलब्धि-

CO-1 *इस पाठक्रम के अध्ययन से छात्र पालि–व्याकरण का विशेष ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।*

CO-2 *इसके द्वारा उन्हें पालि भाषा के संज्ञा पदों एवं समास का सम्यक् ज्ञान हो सकेगा।*

CO-3 *पालि महाव्याकरण के प्रथम पाँच अभ्यासों के द्वारा वे पालि भाषा के प्रायोगिक पक्ष से परिचित हो सकेंगे।*

Unit／इकाई	**Topics／पाठ्य विषय**
I	नामप्पकरण (बालावतार सूत्र संख्या 29-98)
II	समासप्पकरण (बालावतार सूत्र संख्या 99-106)
III	समासप्पकरण (बालावतार सूत्र संख्या 107-111)
IV	पालि महाव्याकरण: अभ्यास 1 से 5

सतत मूल्यांकन-

1. कक्षा में प्रस्तुतीकरण
2. अधिन्यास (Assignment) कार्य
3. कक्षा उपस्थिति

संस्तुत ग्रंथ-

काशयप, भिक्षु जगदीश, पालि महाव्याकरण, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, २००८ (पुनर्मुद्रण)।
काशयप, भिक्षु जगदीश, मज्झिम निकाय, नव नालन्दा महाविहार, नालन्दा, २०१७ (पुनर्मुद्रण)।
लक्ष्मी नारायण तिवारी एवं बीरबल शर्मा, कच्चायनव्याकरण, ताराबुकएजेन्सी, वाराणसी, २०१३।
शास्त्री, स्वामी द्वारिका दास, महासामिधम्मकित्तिप्रणीत बालावतार, बौद्ध भारती, वाराणसी, १९९६।
शुक्ला, हरिशंकर, पालि निबंधावलि, तारा बुक एजेंसी, वाराणसी, १९९३।
Buddhadatta, A. P. *Aids to Pali Conversation and Translation,* P. M. W. Piyaratana, AmbalanGoda

***

Year: Second वर्ष - द्वितीय	Semester: IV सेमेस्टर - चतुर्थ

कोर्स PALI 204 कोड-A420401T	**कोर्स 2- पालि व्याकरण, अनुवाद और लेखन**	*क्रेडिट 03*

Course outcomes:अधिगम उपलब्धि-

CO-1 *इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्र पालि महाव्याकरण के पाँच अभ्यासों द्वारा पालि भाषा के प्रायोगिक पक्ष में दक्षता प्राप्त कर सकेंगे।*

CO-2 *इसके द्वारा पालि–भाषा में विभिन्न विषयों में निबन्ध लिख सकेंगे।*

CO-3 *इसके द्वारा छात्र भाषागत विश्लेषण करने में समर्थ हो सकेंगे।*

CO-4 *इसके द्वारा पालि–भाषा में पत्र लिखने एवं दैनिक संवाद करने में समर्थ हो सकेंगे।*

Unit / इकाई	**Topics /पाठ्य विषय**
I	पालि महाव्याकरण: अभ्यास 6 से 10
II	पालि में निबन्ध: भगवा बुद्धो, चत्तारि अरिय सच्चानि, पटिच्चसमुप्पादो, मज्झिमा पटिपदा, सील, समाधि, पञ्ञा, निब्बान।
III	भाषागत विश्लेषण: चत्तारो सतिपट्ठाना (पृ० 76-77)
IV	विविध पत्र लेखन एवं दैनिक पालि संवाद

सतत मूल्यांकन-

1. *कक्षा में प्रस्तुतीकरण*
2- *अधिन्यास (*Assignment*) कार्य*
3- *कक्षा उपस्थिति*

संस्तुत ग्रंथ-

काशयप, भिक्षु जगदीश, पालि महाव्याकरण, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, २००८ (पुनर्मुद्रण)।

काशयप, भिक्षु जगदीश, मज्झिम निकाय, नव नालन्दा महाविहार, नालन्दा, २०१७ (पुनर्मुद्रण)।

लक्ष्मी नारायण तिवारी एवं बीरबल शर्मा, कच्चायनव्याकरण, ताराबुकएजेन्सी, वाराणसी, २०१३।

शास्त्री, स्वामी द्वारिका दास, महासामिधम्मकित्तिप्रणीत बालावतार, बौद्ध भारती, वाराणसी, १९९६।

शुक्ला, हरिशंकर, पालि निबंधावलि, तारा बुक एजेंसी, वाराणसी, १९९३।

Buddhadatta, A. P. *Aids to Pali Conversation and Translation,* P. M. W. Piyaratana, AmbalanGoda

***

Year: Third वर्ष- तृतीय	Semester: V सेमेस्टर - पंचम

कोर्स PALI 301 कोड-A420501T	***कोर्स* 1 - थेरवाद बौद्ध धर्म का प्रचार एवं प्रसार– I**	***क्रेडिट 03***

Course outcomes: अधिगम उपलब्धि-

CO-1 *इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्र चारों* बौद्ध संगीतियों एवं उनके निष्कर्षों से परिचित हो सकेंगे।

CO-2 इससे छात्र स्थविरवाद और महासांधिक से परिचित हो सकेंगे।

CO-3 इससे छात्र सम्राट अशोक के बौद्ध धर्म के अवदान से परिचित हो सकेंगे।

Unit／इकाई	**Topics／पाठ्य विषय**
I	प्रथम एवं द्वितीय बौद्ध संगीति
II	बौद्ध निकाय (सम्प्रदाय): स्थविरवाद और महासांधिक
III	सम्राट अशोक और तृतीय बौद्ध संगीति
IV	श्रीलंका में चतुर्थ बौद्ध संगीति और तिपिटक का संकलन

सतत मूल्यांकन-

1. कक्षा में प्रस्तुतीकरण
2. अधिन्यास (Assignment) कार्य
3. कक्षा उपस्थिति

संस्तुत ग्रंथ-

बापट, पी०बी०, बौद्ध धर्म के २५०० वर्ष, प्रकाशन विभाग, 1956, दिल्ली।

Bareau André. (2013). *The Buddhist Schools of Small Vehicle*. London: The Buddhist Society Trust.

Bapat P. B. (1956). *2500 Years of Buddhism*. New Delhi: Publication Division, Govt. of India.

Hirakawa, A. (1993). A History of Indian Buddhism. Delhi: Motilal Banarsidass.

Kumar, B. (2019). *Dīpavaṃso*. Delhi: Buddhist World Press.

Kumar B. & Kumar U. (2021). *Saṅgītiyavaṃso*.Delhi: Aditya Prakashan.

Silva, Lily De. “The Paritta Ceremony of Sri Lanka: Its Antiquity and Symbolism.” In Buddhist Thought & Culture, by David J. Kalupahana, 139-150. Delhi: Motilal Banarsidass Publishers Private Limited, 2001.

***

Year: Third वर्ष- तृतीय			Semester: V सेमेस्टर - पंचम
कोर्स PALI 302 कोड-A420501T	*कोर्स 2-* थेरवाद बौद्ध धर्म का प्रचार एवं प्रसार– II		*क्रेडिट 02*

Course outcomes: अधिगम उपलब्धि-

CO-1 *इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्र* बौद्ध धर्म के श्रीलंका , म्यांमार, थाईलैण्ड, कम्बोडिया और लाओस में प्रचार–प्रसार से परिचित हो सकेंगे।

CO-2 इससे छात्र पालि के वंस साहित्य से परिचित हो सकेंगे।

CO-3 इससे छात्र दक्षिण और दक्षिणपूर्व बौद्ध देशों के समारोहों, उपोसथ आदि से परिचित हो सकेंगें।

Unit /इकाई	Topics / पाठ्य विषय
I	थेरवाद बौद्ध धर्म का श्रीलंका, म्यांमार, और थाईलैंड में प्रचार और प्रसार
II	थेरवाद बौद्ध धर्म का कम्बोडिया, और लाओस में प्रचार और प्रसार
III	पालि वंस साहित्य का परिचय
IV	दक्षिण और दक्षिण-पूर्व बौद्ध देशों में समारोह (Ceremonies): परित्राण पाठ, उपोसथ, इत्यादि।

सतत मूल्यांकन-

1. *कक्षा में प्रस्तुतीकरण*
2- *अधिन्यास (*Assignment*) कार्य*
3- *कक्षा उपस्थिति*

संस्तुतग्रंथ-

बापट, पी०बी०, बौद्ध धर्म के २५०० वर्ष, प्रकाशन विभाग, 1956, दिल्ली।

Bareau André. (2013). *The Buddhist Schools of Small Vehicle*. London: The Buddhist Society Trust.

Bapat P. B. (1956). *2500 Years of Buddhism*. New Delhi: Publication Division, Govt. of India.

Hirakawa, A. (1993). A History of Indian Buddhism. Delhi: Motilal Banarsidass.

Kumar, B. (2019). *Dīpavaṃso*. Delhi: Buddhist World Press.

Kumar B. & Kumar U. (2021). *Saṅgītiyavaṃso*.Delhi: Aditya Prakashan.

Silva, Lily De. “The Paritta Ceremony of Sri Lanka: Its Antiquity and Symbolism.” In Buddhist Thought & Culture, by David J. Kalupahana, 139-150. Delhi: Motilal Banarsidass Publishers Private Limited, 2001.

***

<table>
<tr><td colspan="2">Year: Third
वर्ष- तृतीय</td><td>Semester:V
सेमेस्टर- पंचम</td></tr>
<tr><td>कोर्स PALI 303
कोड-A420502T</td><td>कोर्स 3 - द्वितीय प्रश्न पत्र – मिलिंदपञ्हो - I</td><td>क्रेडिट 03</td></tr>
<tr><td colspan="3">Course outcomes: अधिगम उपलब्धि-
CO-1 इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्र संवाद शैली में बौद्ध दर्शन के तत्वों को जानने में समर्थ होंगे।
CO-2 इससे बाहिर–कथा के विभिन्न सोपानों से परिचित हो सकेंगे।
CO-3 इससे छात्र लक्खणपञ्हो के अन्तर्गत महावग्ग से परिचित हो सकेंगे।</td></tr>
<tr><td>Unit／इकाई</td><td colspan="2">Topics／पाठ्य विषय</td></tr>
<tr><td>I</td><td colspan="2">मिलिंदपञ्हो: बाहिर कथा (शास्त्री, पृष्ठ 01-09)</td></tr>
<tr><td>II</td><td colspan="2">मिलिंदपञ्हो: बाहिर कथा (शास्त्री, पृष्ठ 10-17)</td></tr>
<tr><td>III</td><td colspan="2">मिलिंदपञ्हो: बाहिर कथा (शास्त्री, पृष्ठ 18-28)</td></tr>
<tr><td>IV</td><td colspan="2">मिलिंदपञ्हो: लक्खणपञ्हो (महावग्ग)</td></tr>
<tr><td colspan="3">सतत मूल्यांकन-
1. कक्षा में प्रस्तुतीकरण
2. अधिन्यास (Assignment) कार्य
3. कक्षा उपस्थिति</td></tr>
<tr><td colspan="3">संस्तुत ग्रंथ-
शास्त्री, द्वारिकादास, मिलिंदपञ्हपालि,बौद्ध भारती प्रकाशन, वाराणसी, 2006।
वाडेकर, आर० डी०, मिलिंदपञ्हो, मुम्बई विद्यापीठ, २०११।</td></tr>
</table>

Year: Third वर्ष- तृतीय			Semester:V सेमेस्टर- पंचम
कोर्स PALI 304 कोड-A420502T	***कोर्स* 4 -** द्वितीय प्रश्न पत्र - मिलिंदपञ्हो - II		***क्रेडिट 02***

Course outcomes: अधिगम उपलब्धि-

CO-1 इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्र लक्खणपञ्हो के अन्तर्गत अद्धनवग्ग, विचारवग्ग तथा निब्बानगग्ग से परिचित हो सकेंगे।

CO-2 वे विमतिच्छेदनपञ्हो तथा बुद्धवग्ग से परिचित हो सकेंगे।

Unit／इकाई	Topics／पाठ्य विषय
I	मिलिंदपञ्हो: लक्खणपञ्हो (अद्धानवग्ग)
II	मिलिंदपञ्हो: लक्खणपञ्हो (विचारवग्ग)
III	मिलिंदपञ्हो: लक्खणपञ्हो (निब्बानवग्ग); मिलिंदपञ्हो: विमतिच्छेदनपञ्हो (शास्त्री, पृष्ठ82-88)
IV	मिलिंदपञ्हो: विमतिच्छेदनपञ्हो (बुद्धवग्ग)b

सतत मूल्यांकन-

1. *कक्षा में प्रस्तुतीकरण*
2- *अधिन्यास (*Assignment*) कार्य*
3- *कक्षा उपस्थिति*

संस्तुत ग्रंथ-

शास्त्री, द्वारिकादास, मिलिंदपञ्हपालि,बौद्ध भारती प्रकाशन, वाराणसी, 2006।
वाडेकर, आर० डी०, मिलिंदपञ्हो, मुम्बई विद्यापीठ, २०११।

Year: Third वर्ष-तृतीय			Semester: VI सेमेस्टर - षष्ठ
कोर्स PALI 305 कोड-A420601T	**कोर्स 1 - अभिधम्मत्थसंगहो– I**		*क्रेडिट 03*

Course outcomes: अधिगम उपलब्धि-

CO-1 *इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्र अभिधर्म के इतिहास, अभिधर्मापिटक की विषय–वस्तु, और परमार्थ धर्म से परिचित हो सकेंगे।*

CO-2 *इससे छात्र चित्तसंगहो के अन्तर्गत कामावचर, रूपावचर अरूपावचर एवं लोकोत्तर स्वरूपों हो सकेंगे।*

Unit /इकाई	Topics /पाठ्य विषय
I	अभिधर्म का इतिहास, अभिधर्म पिटक की विषयवस्तु, परमार्थ धर्म।
II	अभिधम्मत्थसङ्गहो: चित्तसंगहो- कामावचर एवं रूपावचर
III	अभिधम्मत्थसङ्गहो: चित्तसंगहो- अरूपावचर एवं लोकोत्तर
IV	अभिधम्मत्थसङ्गहो: चेतसिकसंगहो

सतत मूल्यांकन-

1. *कक्षा में प्रस्तुतीकरण*
2- *अधिन्यास (*Assignment*) कार्य*
3- *कक्षा उपस्थिति*

संस्तुत ग्रंथ-

कोसम्बि, धम्मानन्द,*अभिधम्मत्थसंगहो नवनीतटीका*, बुद्धिस्ट वर्ल्ड प्रेस, दिल्ली, २०१७।
कौसल्यायन, भदन्त, अभिधम्मत्थसंगहो, सम्यक् प्रकाशन, २०१३ (पुनर्मुद्रण)
त्रिपाठी, रामशंकर, अभिधम्मत्थ-संगहो, सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, १९९२
Bodhi, B. (2000). *A Comprehensive Manual of Abhidhamma*. USA: BPS Pariyatti Edition

***

Year: Third वर्ष-तृतीय	Semester: VI सेमेस्टर - षष्ठ

कोर्स PALI 306 कोड-A420601T	*कोर्स* 2 - अभिधम्मत्थसंगहो– II	*क्रेडिट 02*

Course outcomes: अधिगम उपलब्धि-

CO-1 *इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्र प्रेतसिक सम्पयोगनय, रूप एवं निब्बान से परिचित हो सकेंगे।*

CO-2 *इससे छात्र चित्तवीथियों के अन्तर्गत पंचद्वारवीथि और मनोद्वार–वीथि से परिचित हो सकेंगे।*

Unit / इकाई	Topics /पाठ्य विषय
I	अभिधम्मत्थसङ्गहो: चेतसिकसम्पयोगनयो
II	अभिधम्मत्थसङ्गहो: रूप
III	अभिधम्मत्थसङ्गहो: निब्बान
IV	चित्त वीथि: पंचद्वारवीथि और मनोद्वारवीथि

सतत मूल्यांकन-

1. *कक्षा में प्रस्तुतीकरण*
2. *अधिन्यास (*Assignment*) कार्य*
3. *कक्षा उपस्थिति*

संस्तुतग्रंथ-

कोसम्बि, धम्मानन्द,*अभिधम्मत्थसंगहो नवनीतटीका*, बुद्धिस्ट वर्ल्ड प्रेस, दिल्ली, २०१७।

कौसल्यायन, भदन्त, अभिधम्मत्थसंगहो, सम्यक् प्रकाशन, २०१३ (पुनर्मुद्रण)

त्रिपाठी, रामशंकर, अभिधम्मत्थ-संगहो, सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, १९९२

Bodhi, B. (2000). *A Comprehensive Manual of Abhidhamma*. USA: BPS Pariyatti Edition

***

ओपेन इलेकिटव कोर्स (कोई एक)

<table>
<tr><td colspan="2">Year: Third
वर्ष- तृतीय</td><td colspan="2">Semester: six
सेमेस्टर - षष्ठ</td></tr>
<tr><td>कोर्स PALI 307
कोड-A420602T</td><td colspan="2">कोर्स 3 (वैकल्पिक) - विसुद्धिमग्गो– I</td><td>क्रेडिट 03</td></tr>
<tr><td colspan="4">Course outcomes: अधिगम उपलब्धि-
CO-1 इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्र विसुद्धिमग्गो के अन्तर्गत निदानादिकथा, सीलस्वरूपावादिकथा, सीलनिसंस तथा सीलनिसंस तथा पातिपोक्ख संवरसील से भलीभॉति परिचित हो सकेंगे।</td></tr>
<tr><td>Unit／इकाई</td><td colspan="3">Topics／पाठ्य विषय</td></tr>
<tr><td>I</td><td colspan="3">सीलनिद्देसो: निदानादिकथा (शास्त्री, पृ० 03-10)</td></tr>
<tr><td>II</td><td colspan="3">सीलनिद्देसो: सीलसरूपादिकथा (शास्त्री, पृ० 11-14)</td></tr>
<tr><td>III</td><td colspan="3">सीलनिद्देसो: सीलानिसंसं (शास्त्री, पृ० 14-17)</td></tr>
<tr><td>IV</td><td colspan="3">सीलनिद्देसो: पातिमोक्खसंवरसीलं (शास्त्री, पृ० 25-30)</td></tr>
<tr><td colspan="4">सतत मूल्यांकन-
1. कक्षा में प्रस्तुतीकरण
2. अधिन्यास (Assignment) कार्य
3. कक्षा उपस्थिति</td></tr>
<tr><td colspan="4">संस्तुत ग्रंथ-
शास्त्री, द्वारिकादास, विसुद्धिमग्ग, प्रथम भाग, बौद्ध भारती प्रकाशन, २००७।
Kumar, B. (2021). Visuddhimaggacullaṭikā: Saṅkhepatthajotanī. Delhi: Eastern Book Linkers.
Kosambi, D. (1999).Visuddhimaaga of Buddhaghosācariya. Delhi: Motilal Banarsidass (Reprint)
Ñaṇamoli, B.(2003).The Path of Purification. Kandy:Buddhist Publication Society (Reprint)

***</td></tr>
</table>

Year: Third वर्ष- तृतीय		Semester: six सेमेस्टर - षष्ठ
कोर्स PALI 308 कोड-A420602T	***कोर्स*** 4 (वैकल्पिक) - **विसुद्धिमग्गो– II**	*क्रेडिट 02*

Course outcomes: अधिगम उपलब्धि-

CO-1 *इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्र* सीलनिद्देसो के अन्तर्गत इन्द्रियसंवरसीलं *तथा* पच्चयसन्निस्सितसीलं *से सम्यक् परिचित हो सकेंगे।*

Unit／इकाई	Topics／पाठ्य विषय
I	सीलनिद्देसो: इन्द्रियसंवरसीलं (शास्त्री, पृ॰ 30-33)
II	सीलनिद्देसो: इन्द्रियसंवरसीलं [परिच्छेद ३० पर्यन्त] (शास्त्री, पृ॰ 34-40)
III	सीलनिद्देसो: इन्द्रियसंवरसीलं (शास्त्री, पृ॰ 40-45)
IV	सीलनिद्देसो: पच्चयसन्निस्सितसीलं (शास्त्री, पृ॰ 45-52)

सतत मूल्यांकन-

1. *कक्षा में प्रस्तुतीकरण*
2. *अधिन्यास (*Assignment*) कार्य*
3. *कक्षा उपस्थिति*

संस्तुत ग्रंथ-

शास्त्री, द्वारिकादास, विसुद्धिमग्ग, प्रथम भाग, बौद्ध भारती प्रकाशन, २००७।

Kumar, B. (2021). Visuddhimaggacullaṭikā: Saṅkhepatthajotanī. Delhi: Eastern Book Linkers.

Kosambi, D. (1999).*Visuddhimaaga of Buddhaghosācariya.* Delhi: Motilal Banarsidass (Reprint)

Ñaṇamoli, B.(2003).The Path of Purification. Kandy:Buddhist Publication Society (Reprint)

***

अथवा

Year: Third वर्ष- तृतीय		Semester: Six सेमेस्टर - षष्ठ
कोर्स PALI 309 कोड-A4206003T	**कोर्स 5 - द्वितीय प्रश्न पत्र-ख (वैकल्पिक) - बौद्धदर्शन प्रथम भाग– I**	क्रेडिट 03

Course outcomes: अधिगम उपलब्धि-

CO-1 इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्र बौद्ध दर्शन का सामान्य परिचय प्राप्त कर सकेंगे।

CO-2 इससे वैभाषिक एवं सौत्रान्त्रिक सम्प्रदायों उनके आचार्यों से भी परिचित हो सकेंगे।

Unit／इकाई	Topics／पाठ्य विषय
I	बौद्ध दर्शन का सामान्य परिचय
II	वैभाषिक सम्प्रदाय और साहित्य का विकास
III	सौत्रांत्रिक दर्शन: बाह्यार्थ की सत्ता और अनुमेयता
IV	वैभाषिक और सौत्रांत्रिक मत के विभिन्न आचार्य

सतत मूल्यांकन-

1. कक्षा में प्रस्तुतीकरण
2. अधिन्यास (Assignment) कार्य
3. कक्षा उपस्थिति

संस्तुत ग्रंथ-

उपाध्याय, बलदेव, बौद्ध दर्शन मीमांसा, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, १९७०।

उपाध्याय, बलदेव, भारतीय दर्शन, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, १९७२।

पाण्डेय, गोविन्द चंद्र, बौद्ध धर्म के विकास का इतिहास, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, इलाहाबाद, २०१० (पुनर्मुद्रण)।

त्रिपाठी, रामशंकर, सौत्रांत्रिक दर्शन, केंद्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी, २००८।

Dhammajoti, K. L. (2005). *Sarvāstivāda Abhidharma*. Hong Kong: The Buddha Dharma Centre of Hong Kong.

Hirakawa, A. (1993). A History of Indian Buddhism. Delhi: Motilal Banarsidass.

Takakusu, J. (2001). *The Essentials of Buddhist Philosophy*. Delhi: MunshiramManoharlal Publishers. (Reprint)

***

Year: Third वर्ष- तृतीय		Semester: Six सेमेस्टर - षष्ठ
कोर्स PALI 310 कोड-A420603T	***कोर्स*** **6** - द्वितीय प्रश्न पत्र-ख (वैकल्पिक) - बौद्धदर्शन प्रथम भाग– II	***क्रेडिट 02***

Course outcomes: अधिगम उपलब्धि-

CO-1 *प्रस्तुत पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्र कर्म और प्रतिसन्धि के सिद्धन्तों* तथा क्षणिकवाद और अनात्मवाद से परिचित हो सकेंगें।

CO-1 इससे छात्र स्थविरवादी एवं सर्वास्तिवादी मत से परिचित होते हुए बोधिसत्व यान और पारभिता ग्रहण को समझ सकेंगे।

Unit／इकाई	Topics／पाठ्य विषय
I	कर्म और प्रतिसन्धि का सिद्धांत
II	क्षणिकवाद और अनात्मवाद
III	त्रिकाय: स्थविरवादी और सर्वास्तिवादी मत
IV	बोधिसत्त्वयान और पारमिता ग्रहण

सतत मूल्यांकन-

1. *कक्षा में प्रस्तुतीकरण*
2- *अधिन्यास (*Assignment*) कार्य*
3- *कक्षा उपस्थिति*

संस्तुत ग्रंथ-

उपाध्याय, बलदेव, बौद्ध दर्शन मीमांसा, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, १९७०।
उपाध्याय, बलदेव, भारतीय दर्शन, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, १९७२।
पाण्डेय, गोविन्द चंद्र, बौद्ध धर्म के विकास का इतिहास, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, इलाहाबाद, २०१० (पुनर्मुद्रण)।
त्रिपाठी, रामशंकर, सौत्रांत्रिक दर्शन, केंद्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी, २००८।
Dhammajoti, K. L. (2005). *Sarvāstivāda Abhidharma*. Hong Kong: The Buddha Dharma Centre of Hong Kong.
Hirakawa, A. (1993). A History of Indian Buddhism. Delhi: Motilal Banarsidass.
Takakusu, J. (2001). *The Essentials of Buddhist Philosophy*. Delhi: MunshiramManoharlal Publishers. (Reprint)

***

<table>
<tr><td colspan="2">Year: Third
वर्ष- तृतीय</td><td colspan="2">Semester: Six
सेमेस्टर - षष्ठ</td></tr>
<tr><td>कोर्स PALI 311
कोड-A420604T</td><td colspan="2">कोर्स 7 - बौद्धदर्शन द्वितीय भाग– I</td><td>क्रेडिट 03</td></tr>
</table>

Course outcomes: अधिगम उपलब्धि-

CO-1 *इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्र बौद्ध* दर्शन के विशिष्ट ज्ञान को प्राप्त करने में समर्थ हो सकेंगे।

CO-2 इससे छात्र विज्ञानवादी अचार्यों , क्लिवर मनोविज्ञान एवं आलय विज्ञान से परिचित हो सकेंगे।

CO-3 इससे छात्र आध्यमिक दर्शन के विशिष्ट आचार्यों एवं शून्यवाद से भी परिचित हो सकेंगे।

Unit／इकाई	Topics／पाठ्य विषय
I	विज्ञानवाद के आचार्य: मैत्रेयनाथ, वसुबंधु, असंग, स्थिरमति, दिङ्नाग, धर्मपाल और धर्मकीर्ति।
II	विज्ञानवाद: विज्ञान के प्रभेद, क्लिष्ट मनोविज्ञान, और आलय विज्ञान ।
III	माध्यमिक दर्शन के आचार्य: नागार्जुन, आर्यदेव, चंद्रकीर्ति, शान्तिदेव, और शान्तरक्षित।
IV	शून्यवाद का सिद्धान्त।

सतत मूल्यांकन-

1. *कक्षा में प्रस्तुतीकरण*
2- *अधिन्यास (*Assignment*) कार्य*
3- *कक्षा उपस्थिति*

संस्तुत ग्रंथ-

उपाध्याय, बलदेव, बौद्ध दर्शन मीमांसा, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, १९७०।
उपाध्याय, बलदेव, भारतीय दर्शन, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, १९७२।
कृष्णनाथ, बौद्ध निबन्धावली, केंद्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी, १९९७।
तेनजिन, पेमा, महायानसंग्रहः, केंद्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी, २०१२।
तेनजिन, पेमा, मध्यमकावतार एवं भाष्य (छठा चित्तोत्पाद), केंद्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय,सारनाथ, वाराणसी, २०१६।
पाण्डेय, गोविन्द चंद्र, बौद्ध धर्म के विकास का इतिहास, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, इलाहाबाद, २०१० (पुनर्मुद्रण)।
लामा, दलाई, बौद्ध सिद्धान्त सार, केंद्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी, २००५।

Chatterjee, A. K. (1975). *The Yogācāra Idealism*. Delhi: Motilal Banarsidass. (Reprint)

Dhammajoti, K. L. (2005). *Sarvāstivāda Abhidharma*. Hong Kong: The Buddha Dharma Centre of Hong Kong.

Hirakawa, A. (1993). A History of Indian Buddhism. Delhi: Motilal Banarsidass.

Pandey, G. C. (2010), Studies in Mahāyāna, Sarnath: Central University of Tibetan Studies.

Silk, J. A. (2005). What, If Anything, Is Mahāyāna Buddhism?. *Buddhism: The origins and nature of Mahāyāna Buddhism; Some Mahāyāna religious topics*, *3*, 383.

Sharma, T. R. (1993).*Vijñaptimātratāsiddhi: Vimśatikā*. Delhi: Eastern Book Linkers.

Takakusu, J. (2001). *The Essentials of Buddhist Philosophy*. Delhi: MunshiramManoharlal Publishers. (Reprint)

***

अथवा

<table>
<tr><td colspan="2">Year: Third
वर्ष- तृतीय</td><td colspan="2">Semester: Six
सेमेस्टर - षष्ठ</td></tr>
<tr><td>कोर्स PALI 312
कोड-A420604T</td><td colspan="2">**कोर्स 8 - बौद्धदर्शन द्वितीय भाग– II**</td><td>क्रेडिट 02</td></tr>
<tr><td colspan="4">Course outcomes: अधिगम उपलब्धि-
CO-1 *इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्र दश भूमि से परिचित हो सकेंगे।*
CO-2 *वे महायान की त्रिकाय व्यवस्था से परिचित हो सकेंगे।*
CO-3 *वे बौद्धन्याय* के परिचय के साथ–साथ महायान में निर्वाण के स्वरूप से परिचित हो सकेंगे।</td></tr>
<tr><td>Unit／इकाई</td><td colspan="3">Topics／पाठ्य विषय</td></tr>
<tr><td>I</td><td colspan="3">दशभूमि-शास्त्र में दस भूमियाँ</td></tr>
<tr><td>II</td><td colspan="3">त्रिकाय का विकास, महायान में त्रिकाय व्यवस्था</td></tr>
<tr><td>III</td><td colspan="3">बौद्ध न्याय का परिचय</td></tr>
<tr><td>IV</td><td colspan="3">महायान में निर्वाण की कल्पना</td></tr>
<tr><td colspan="4">सतत मूल्यांकन-
1- कक्षा में प्रस्तुतीकरण
2- *अधिन्यास (* Assignment*) कार्य*
3- *कक्षा उपस्थिति*</td></tr>
<tr><td colspan="4">संस्तुत ग्रंथ-
उपाध्याय, बलदेव, बौद्ध दर्शन मीमांसा, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, १९७०।
उपाध्याय, बलदेव, भारतीय दर्शन, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, १९७२।
कृष्णनाथ, बौद्ध निबन्धावली, केंद्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी, १९९७।
तेनजिन, पेमा, महायानसंग्रहः, केंद्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी, २०१२।
तेनजिन, पेमा, मध्यमकावतार एवं भाष्य (छठा चित्तोत्पाद), केंद्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय,सारनाथ, वाराणसी, २०१६।
पाण्डेय, गोविन्द चंद्र, बौद्ध धर्म के विकास का इतिहास, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, इलाहाबाद, २०१० (पुनर्मुद्रण)।
लामा, दलाई, बौद्ध सिद्धान्त सार, केंद्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी, २००७।
Chatterjee, A. K. (1975). *The Yogācāra Idealism*. Delhi: Motilal Banarsidass. (Reprint)
Dhammajoti, K. L. (2005). *Sarvāstivāda Abhidharma*. Hong Kong: The Buddha Dharma Centre of Hong Kong.
Hirakawa, A. (1993). A History of Indian Buddhism. Delhi: Motilal Banarsidass.
Pandey, G. C. (2010), Studies in Mahāyāna, Sarnath: Central University of Tibetan Studies.
Silk, J. A. (2005). What, If Anything, Is Mahāyāna Buddhism?. *Buddhism: The origins and nature of Mahāyāna Buddhism; Some Mahāyāna religious topics*, *3*, 383.
Sharma, T. R. (1993).*Vijñaptimātratāsiddhi: VimŚatikā*. Delhi: Eastern Book Linkers.
Takakusu, J. (2001). *The Essentials of Buddhist Philosophy*. Delhi: MunshiramManoharlal Publishers. (Reprint)***</td></tr>
</table>